www.ved-yog.com

ओ३म्

गीता सार

१. आत्मा अजर अमर है, इसे कोई जला नहीं सकता, कोई छेद नहीं सकता, कोई गीला नहीं कर सकता और न ही कोई सुखा सकता।

२. अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए, क्षत्रिय के लिए धर्म की रक्षा हेतु अधर्मियों का नाश करना, पाप = अधर्म नहीं है; परन्तु कर्त्तव्यपथ से मुख मोड़ना ही पाप है ।

३. जो बीत गया उससे शिक्षा लो, भविष्य को सुधारने के लिए वर्त्तमान का सदुपयोग करते हुए धर्मपथ पर चलो। यह मनुष्य-जन्म अनमोल है, इसे व्यर्थ न गवाँओ ।

४. लाभ-हानि, सुख-दुःख, मान-अपमान जीवन के संग रहते है। इनके लिए शोक करना या अत्यधिक खुशी मनाना उचित नहीं है। यह अविद्या है। जीवन में समभाव से रहो। जो पदार्थ आज तुम्हारा है, कल किसी और का था और कल किसी और का होगा । उसे अपना समझ कर प्रसन्नता मे मग्न होना ही दुःख का हेतु है।

५. न तो जन्म से पहले इस संसार में तुम्हारा कोई स्थिर संबंधी था और न ही मृत्यु के बाद रहेगा। केवल परमात्मा ही सब काल में सब का सच्चा मित्र है। अतः विवेक वैराग्य के द्वारा अपने लक्ष्य को जानते हुए, आत्मसाक्षात्कार कर परमात्मा को पाना ही जीवन की सफलता है।

६. ब्राह्मणत्व - ज्ञान के द्वारा अज्ञान का नाश, क्षत्रियत्व - न्याय के द्वारा अन्याय का नाश और वैश्यत्व - धन-दान के द्वारा सबके दारिद्रय का नाश, इन तीनों व्रतों में से एक व्रत को अग्निरूप में अपने जीवन में धारण करो। इस जीवन यही तुम्हारे लिये सत्कर्त्तव्य है। स्ववर्णाश्रम के कर्त्तव्य कर्मों को करते हुए, परमात्म-प्राप्ति के लिए पुरुषार्थ करते रहो।

७. जीवन परिवर्तनशील है। मृत्यु ही नवजीवन प्रदान करती है। नए जीवन में भी फिर से धर्मपथ पर चलकर साधना द्वारा ब्रह्मसाक्षात्कार कर मोक्ष प्राप्त करना ही पुरुष का चरम लक्ष्य है ।

८. यह शरीर आत्मा का साधन है। हम शरीर नहीं हैं। यह अग्नि, जल, वायु, पृथिवी और आकाश से बना है और मृत्यु के पश्चात् इन्हीं तत्वों में मिल जाएगा।

९. निष्काम कर्म करो। कर्मफल की चिन्ता न करो। अपने सभी कर्मों का फल प्रभु के समर्पित कर दो — इससे दुःख, चिन्ता आदि छूट जाएगें और सर्वदा सुख की अनुभूति होगी ।

सतीश आर्य

सब समस्याओं के समाधानार्थ सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें ।